॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥ चतुर्थः प्रश्नः ॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्रायं राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्। तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुꣳश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय मागधम्॥१॥

गीतायं सूतम्। नृत्तायं शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्मायं रेभम्। नरिष्ठायै भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दायं स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय तक्षाणम्॥२॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपायं मणिकारम्। शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टायं रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय श्वनितम्॥३॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्। आर्त्यै परिविविदानम्। अराध्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय भिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्। बलायोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥४॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय दुर्मदम्। प्रयुद्भ्य उन्मत्तम्। गन्धर्वाफ्सराभ्यो व्रात्यम्। सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवेभ्यः कितवम्। इर्यताया अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानेभ्यः कण्टककारम्॥५॥

उथ्सादेभ्यः कुब्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वार्भ्यः स्रामम्। स्वप्नायान्धम्। अधर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्। प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्निनम्। उपशिक्षाया अभिप्रश्निनम्। मर्यादायै प्रश्नविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्त्यै क्षत्तारम्। औपद्रष्टाय सङ्ग्रहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने परिष्कन्दम्। प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वाहारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य पृष्ठायाभिषेक्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णेगम्। देवलोकाय पेशितारम्। मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्। सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारम्। अवर्त्यै वधायोपमन्थितारम्। सुवर्गाय लोकाय भागदुघम्। वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मेभ्यो हस्तिपम्। जवायाश्वपम्। पुष्ट्यै गोपालम्। तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्। कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्। श्रेयसे वित्तधम्। अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधाय निसरम्। शोकायाभिसरम्। उत्कूलविकूलाभ्यां त्रिस्थिनम्। योगाय योक्तारम्। क्षेमाय विमोक्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायाञ्जनीकारम्। निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायासूम्॥१०॥

यम्यै यमसूम्। अथर्वभ्योऽवतोकाम्। संवथ्सराय पर्यारिणीम्। परिवथ्सराया-विजाताम्। इदावथ्सरायापस्कद्वरीम्। इद्वथ्सरायातीत्वरीम्। वथ्सराय विजर्जराम्। संवथ्सराय पलिक्नीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय दावपम्॥११॥

सरोभ्यो धैवरम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावरीभ्यो बैन्दम्। नड्वलाभ्यः शौष्कलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय मार्गारम्। तीर्थेभ्य आन्दम्। विषमेभ्यो मैनालम्। स्वनेभ्यः पर्णकम्। गुहाभ्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भषम्। अन्ताय बहुवादिनम्। अनन्ताय मूकम्। महसे वीणावादम्। क्रोशाय तूणवध्मम्। आक्रन्दाय दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्पराय शङ्खध्मम्। ऋभुभ्यो जिनसन्धायम्। साध्येभ्यश्चर्मम्णम्॥१३॥

बीभथ्सायै पौल्कसम्। भूत्यै जागरणम्। अभूत्यै स्वपनम्। तुलायै वाणिजम्। वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः सिध्मलम्। पश्चाद्घोषाय ग्लावम्। ऋत्यै जनवादिनम्। व्युद्ध्या अपगल्भम्। सꣳशराय प्रच्छिदम्॥१४॥

हसाय पुꣳश्चलूमा लभते। वीणावादं गणकं गीताय। यादसे शाबुल्याम्। नर्माय भद्रवतीम्। तूणवध्मं ग्रामण्यै पाणिसङ्घातं नृत्ताय। मोदायानुक्रोशकम्। आनन्दाय तलवम्॥१५॥

अ॒क्ष॒रा॒जाय॑ कित॒वम्। कृ॒ताय॑ सभा॒विनम्॑। त्रेता॑या आदिनवद॒र्शम्। द्वा॒प॒राय॑ बहि॒ः सदम्॑। कल॑ये सभास्था॒णुम्। दु॒ष्कृ॒ताय॑ च॒रका॑चार्यम्। अध्व॑ने ब्रह्मचा॒रिणम्॑। पि॒शा॒चेभ्य॑ः सैल॒गम्। पि॒पा॒सायै॑ गोव्य॒च्छम्। निर्ऋ॑त्यै गोघा॒तम्। क्षु॒धे गो॑विक॒र्तम्। क्षु॒त्तृ॒ष्णाभ्या॒न्तम्। यो गां वि॒कृन्त॑न्तं मा॒ꣳसं भिक्ष॑माण उप॒तिष्ठ॑ते॥१६॥

भूम्यै॑ पीठस॒र्पिण॒मा ल॑भते। अ॒ग्नये॑ऽꣳस॒लम्। वा॒यवे॑ चाण्डा॒लम्। अ॒न्तरि॑क्षाय वꣳशन॒र्तिनम्॑। दि॒वे ख॑ल॒तिम्। सूर्या॑य हर्य॒क्षम्। च॒न्द्रम॑से मिर्मि॒रम्। नक्ष॑त्रेभ्यः कि॒लासम्॑। अह्ने॑ शु॒क्लं पि॑ङ्ग॒लम्। रात्रि॑यै कृ॒ष्णं पि॑ङ्गा॒क्षम्॥१७॥

वा॒चे पुरु॑ष॒मा ल॑भते। प्रा॒णम॑पा॒नं व्या॒नमु॑दा॒नꣳ स॑मा॒नं तान् वा॒यवे॑। सूर्या॑य॒ चक्षु॒रा ल॑भते। मन॑श्च॒न्द्रम॑से। दि॒ग्भ्यः श्रोत्रम्॑। प्र॒जाप॑तये॒ पुरु॑षम्॥१८॥

अथै॒तानरू॑पेभ्य॒ आल॑भते। अति॑ह्रस्व॒मति॑दीर्घम्। अति॑कृश॒मत्यꣳस॑लम्। अति॑शुक्ल॒मति॑कृष्णम्। अति॑श्लक्ष्ण॒मति॑लोमशम्। अति॑किरिट॒मति॑दन्तुरम्। अति॑मिर्मिर॒मति॑मेमिषम्। आ॒शायै॑ जा॒मिम्। प्र॒ती॒क्षायै॑ कुमा॒रीम्॥१९॥

ब्रह्म॑णे गी॒ताय॒ श्रमा॑य स॒न्धये॑ न॒दीभ्य॑ उथ्सा॒देभ्य॒ ऋत्यै॒ भाया॒ अमे॑भ्यो म॒न्यवे॑ य॒म्यै दश॑दश॒ सरो॑भ्यो॒ द्वादश प्रति॒श्रुत्का॑यै बीभ॒त्साये॒ दश॑दश॒ हसा॑य स॒माक्षरा॒जाय॒ त्रयो॑दश॒ भूम्यै॒ दश॑ वा॒चे षडथ॒ नवैका॒न्नविꣳशतिः॥१९॥

ब्रह्म॑णे य॒म्यै नव॑दश॥१९॥

ब्रह्म॑णे कुमा॒रीम्॥

हरिः॑ ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

generated on **February 1, 2025**

Downloaded from http://stotrasamhita.github.io | StotraSamhita | Credits